**National Journal of Advanced Research**
**ISSN: 2455-216X; Impact Factor: RJIF 5.12**
**Received: 10-08-2020; Accepted: 25-08-2020; Published: 11-09-2020**
**www.allnationaljournal.com**
**Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 18-21**

# स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में शांति शिक्षा के तत्वों का अध्ययन तथा शैक्षिक जगत में उनकी प्रासंगिकता

**अमित कुमार [1], वी. के. शर्मा [2]**
[1] शोधकर्ता, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत
[2] शोध निर्देशक एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की, उत्तराखंड, भारत

**सारांश**
स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन मानव के लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक हैं। वे आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। स्वामी विवेकानन्द वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के समस्त स्वरुपों के उज्ज्वल प्रतीक थे। यह उन्हीं की प्रतिभा थी जिससे वेदान्त का प्रतिपादन इस रुप में हुआ कि वह वर्तमान युग के मनुष्य द्वारा हृदयंगम किया जा सके। उनका प्रगाढ़ देश प्रेम, गरीबी, अन्धविश्वास और सामाजिक पतन के विरोधी, जाति प्रथा से अत्यन्त चिन्तित, विशेषाधिकार के कट्र विरोधी, स्त्रियों का पिछड़ापन दूर करने के प्रबल पक्षधर, विज्ञान एवं टैक्नालॉजी के समर्थक, शारीरिक विकास के प्रबल समर्थक, अभय के विकास पर बल देने का गहरा चिन्तन शांति शिक्षा के तत्वों से पूर्ण है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उन सभी शांति तत्वों का संकलन एवं प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

**मुख्य शब्दः** दर्शन, शांति शिक्षा, शैक्षिक जगत

## प्रस्तावना
आज हम सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक एवं अन्यान्य प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए पश्चिमी सिद्धान्तों की ओर भाग रहे हैं। हमें अपनी बौद्धिक प्रखरता पर विश्वास नहीं है। हमारी सोच बनती जा रही है कि कोई सिद्धान्त तब तक सत्य नहीं हो सकता जब तक कि कोई पश्चिमी विद्वान प्रमाण न दें। यदि ऐसे में हम विफल हुए तो स्व–विवेक का प्रयोग करने के स्थान पर किसी ऐसे ही दूसरे सिद्धान्त की ओर भागने लगेंगे। आज के बुद्धिजीवी कहे जाने वाले ऐसे वर्ग की यह निम्न सोच है। आज चिन्तन करते समय, कोई व्यवस्था अंगीकार करते समय यह नहीं सोचा जाता कि हमारे अधिकांश समाज सुधारक महान देशभक्त थे। वे पश्चिमीकरण या अंधानुकरण के बिल्कुल पक्ष में नहीं थे क्योंकि पश्चिमीकरण के बिना भी प्रगतिवादी हुआ जा सकता है।
स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन मानव के लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक हैं। स्वामी विवेकानन्द का जन्म 19वीं सदी के उतरार्द्ध में हुआ लेकिन उनके विचार और जीवन दर्शन आज के दौर में अत्यधिक प्रासंगिक है। विवेकानंद जैसे महापुरुष मृत्यु के बाद भी जीवित रहते है। और अमर हो जाते है तथा सदियों तक अपने विचारों और शिक्षा से लोगों को प्रेरित करते रहते है मौजूदा समय में विश्व संरक्षणवाद एवं कटटरवाद की ओर बढ रहा है जिससे भारत भी अछूता नहीं है विवेकानंद का राष्ट्रवाद न सिर्फ अन्तर्राष्ट्रीय बल्कि मानववाद की भी प्रेरणा देता है। इसके साथ ही विवेकानंद की धर्म की अवधारणा लोगों को जोडने के लिये अत्यंत उपयोगी है। क्योंकि यह अवधारणा भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व सर्वधर्म समभव पर जोर देती है। यदि विश्व सर्वधर्म समभव का अनुकरण करे तो विश्व की तो तिहाई समस्याओं और हिंसा को रोका जा सकता है। भारत की एक बडी संख्या अभी भी गरीबी में जीवन जीने के लिये मजबूर है तााि वंचि समुदायों की समस्याएं अभी भी वैसी ही बनी हुई है यदि विवेकानन्द की दरिद्रनारायण की संकल्पना को साकार किया जाये तो असमानता गरीबी, गैर बराबरी, अस्पृश्यता आदि से बिना बल प्रयोग किये ही निपटा जा सकता है तथा एक आदर्श समाज की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।
अतः स्वामीजी ने कहा है –''वीर बनो। हमेशा कहो, मै निर्भय हूँ, सबसे कहो –डरो मत, भय मृत्यु हैं, भय पाप है, भय नर्क हैं, भय अधार्मिकता है तथा भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।''
भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा का अर्थ मुक्ति प्रदान करना है।'सा विद्या या विमुक्तये'। शिक्षा व्यक्ति की वृद्धि की परिष्कृत, परिमार्जित करती है, अज्ञानान्धकार से निकालकर ज्ञान के प्राशि की ओर ले जाती है। शिक्षा ही उसे सत व असत् मे विवेक करना सिखाती है।
आज वैश्वीकरण के युग में जहां प्रतियोगिता की अंधी दौड़ लगी हुई है वहीं शिक्षा की अति आवश्यकता हैं जो एक अच्छे मानव, अच्छे नागरिक ओर एक समाज का निर्माण करें। जहां के नागरिक अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की और प्रेरित हों। वें शान्ति शिक्षा के महत्व को समझ सकें।
अतः शांति शिक्षा एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जिसका अर्थ ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो अंहिसा, सामाजिक न्याय, भातृत्व व समानता आदि सकारात्मक गुणों को अपने जीवन का अगं बनाएं और हिंसा, शोषण, सामाजिक अन्याय, द्वेष, परस्पर वैमनस्य ओर असहयोग आदि नकारात्मक प्रवृतियों से दूर रहें। इस रूप में शांति–शिक्षा एक प्रक्रिया है जो प्रांरभ से ही बालकों में शैक्षिक पर्यावरण के माध्यम से सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है।

## पूर्व में किये गये शोध अध्ययन
सिंह, पूनम,(2003) ''मूल्य विकास के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के क्रियान्वयन का अध्ययन'' इस शोध में गांधी जी एवं विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के अनुसार मानवीय मूल्यों का चयन, वर्गीकरण एवं विवेचन किया है। गांधी जी एवं स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों के महत्व पर अत्यधिक बल दिया है तथा आदर्श समाज में उच्च कोटि के मूल्यों वाली शिक्षा पर बल दिया है।
जैन, बी.एल., (2002) ''प्रमुख स्मृतियों के शिक्षा दर्शन का अध्ययन'' इस शोध में प्रमुख स्मृतियों के शैक्षिक विचारों का चयन, वर्गीकरण एवं विवेचन किया गया है। स्मृति शिक्षा में शिक्षा को व्यक्ति के रुप में नही अपितु सम्पूर्ण सामाजिक विकास के तन्त्र के रुप में स्वीकार किया गया है, जिसका अन्तिम एवं चरम लक्ष्य प्रयास से श्रेयस तथा प्रवृति से निवृति की ओर प्रयास था।
भारतीय, डी. विजय,(1999)'' स्वामी विवेकानन्द और जॉन ड्यूवी

के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन ''इस शोध में स्वामी विवेकानन्द एवं जॉन डयूवी के शैक्षिक योगदान एवं शिक्षा दर्शन को ज्ञात करने के लिए किया गया प्रयास है। अध्ययन का उद्देश्य विवेकानन्द एवं जॉन ड्यूवी के शैक्षिक दर्शन को निम्नलिखित पक्षों में तुलना एवं विश्लेषण करके ज्ञात करना था –जीवन दर्शन ,शिक्षा का सम्प्रत्यय एवं लक्ष्य तथा शिक्षण अधिगम की विधियाँ ।

रीमा,एम. (1993), ''ए केम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द एजूकेशनल थॉट ऑफ स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी'' इस शोध में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार वैदिक शिक्षा के चरित्र निर्माण, गुरुगृह वास प्रथा, शिक्षक के चरित्र व ब्रह्मचर्य पर आधारित है। उनका शिक्षा दर्शन, धर्म के मूल्य, नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक विकास, नारी स्वतंत्रता के महत्व एवं शिक्षा के द्वारा आम जन को उपर उठाने पर बल देता हैं।

कौर, रविन्दर जीत, (1992), ''श्री अरविन्द एवं महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का आधुनिक शिक्षा पद्धति के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'', इस शोध में श्री अरविन्द और महात्मा गांधी के दर्शन का सामान्य अध्ययन किया गया है।

दत्त ,सुनिल कृष्ण, (1991) ''उपनिषदों का शिक्षा दर्शन और विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन'', इस शोध में उपनिषद के दर्शन में तत्वमीमांसा, ज्ञान मीमांसा और मूल्य मीमांसा का अध्ययन किया गया है।

चित्रा त्रिपाठी (2009) ने अपने लेख में स्वामी विवेकानन्द के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों को नारी सशक्तीकरण के सम्बन्ध में स्पष्ट किया है जिसमें स्वामी जी का मानना था कि स्त्री एवं पुरुष में भेदभाव उचित नहीं है, इनमें भेदभाव करने से भारतीय समाज पतन की ओर जायेगा। अतः स्त्री और पुरुष दोनों के लिए शिक्षा की समान व्यवस्था एवं सुविधा होनी चाहिए।

शान्ति शिक्षा नकारात्मक सोच व्यवहार, हिंसक घटनाओं, क्रियाओं आदि को सकारात्मक सोच, अंहिसा, प्रेम निर्माण आदि में बदलने की प्रक्रिया है।

''विश्व के समस्त जीवों से प्रेम करो धरती पर निम्नतम कोटि का प्राणी भी ईश्वर का प्रतिरूप है, इसलिए वह तुम्हारे प्रेम का अधिकारी है।'' –महात्मा गांधी

शान्ति शिक्षा नकारात्मक सोच व्यवहार, हिंसक घटनाओं, क्रियाओं आदि को सकारात्मक सोच, अंहिसा, प्रेम निर्माण आदि में बदलने की प्रक्रिया है। –शोधार्थी

**शांति शिक्षा के उद्देश्यः** नायर ने शांति शिक्षा के निम्नलिखित निम्न उद्देश्यों पर बल दिया हैं –

1. बालको को प्रारम्भ से ही उचित एवं अनुचित के विवेक को जाग्रत करना।
2. धार्मिक सहिष्णुता एवं नैतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोंण विकसित करना।
3. बालकों में सह अस्तित्व की भावना का विकास करना।
4. प्रारंभ से ही मानवाधिकारों के प्रति बालकों को सचेष्ट करना।
5. बालकों में पारस्परिक एकता पडोसियों के प्रति सकारात्क दृष्टिकोंण एवं भ्रातत्व की भावना का विकास करना।
6. बालकों को प्रारंभ से ही जिम्मेदार नागरिक के रूप तैयार करना जिससे वे बडे होकर कुशल उपभोक्ता बन सकें।
7. बालकों को उपयुक्त नेतृत्व की शिक्षा देना जिससे वे देश के प्रति अपने दायित्वों का कुशलता से निर्वाह कर सकें।
8. बालकों को युद्ध हिंसा अन्याय शोषण व वैमनस्य आदि के परिणामो से अवगत करना जिससे युद्ध की भयावहता को जा नकर उसके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

**स्वामी विवेकानन्द के विचारों में शान्ति शिक्षा के तत्व**

**जीवन कौशल –** स्वामी विवेकानन्द जी व्यक्ति के आत्म विश्वास, आत्म श्रद्धा, आत्म नियंत्रण, आत्म निर्भरता, आत्म त्याग, मानवता सहयोग एवं प्रेम तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करके दिव्य मानव का सृजन करना चाहते थे। विवेकानन्द ने वास्तविक जीवन के परिप्रेक्ष्य में लौकिक और पारलौकिक मूल्यों के बीच सुदृढ़ सेतु बनाया है। उन्होंने चरित्र ह्रदय, आत्मा पूर्ण मानव शरीर और मन में छिपी पूर्णता के प्रकाशन, विश्वबन्धुत्व बनाने का ओजस्वी सन्देश दिया है।

**मानवाधिकार –** स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार हम भरतीय पहले हैं तथा मराठी, गुजराती, बंगली, मद्रासी बाद में हैं। इनके अनुसार सभी मनुष्य भारतीय है। उनमें कोई अमीरी–गरीबी का भेद नहीं, सभी को समान अधिकार होने चाहिए।

**आपसी समझ, सहनशीलता –** शान्ति शिक्षा किसी औपचारिक शिक्षा का विषय नहीं है इसके लिए न ही कोई परीक्षण होता है और न ही कोई सर्टिफिकेट होता है। इसकी आधारशिला समझदारी और पुनर्बलन है। इसकी आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति विशेष को, समाज को, राष्ट्र को तथा विश्व को है। स्वामी जी ने कहा है ''सहयोग न कि विरोध'', पर भाव ग्रहण न कि पर भाव विनाश'', ''समन्वय और शान्ति न कि मतभेद और कलह'', इन विचारों और भावनाओं का प्रभाव आज भी है। विवेकानन्द जी ने रूढ़िवादी विचारों, अन्धविश्वासों को छोड़ने एवं पराधीनता को त्यागने का आह्वाहन किया है। उनके विचार वर्तमान पीढ़ी के मार्गदर्शक हैं। वे चाहते थे कि हीनभावना मानसिक दासता के स्थान पर आपसी समझ सहनशीलता बने और बढ़े और यह तभी हो सकता है जब बालक को शिक्षा के साथ मूल्य व्यवस्था में नैतिक, सामाजिक अध्यात्मिक, राष्ट्रीय मूल्य की शिक्षा मिले। स्वामी जी ने समाज में व्याप्त दरिद्रता, क्षुधा, अशिक्षा, जातिवाद से दुखी थे इसलिए वे शिक्षा के साथ नैतिक एव धार्मिक विचारों का सामंजस्य विश्वबन्धुत्व की भावना भारतीय संस्कृति के प्रति उदारभाव की मनोवृति तथा ऐसे समाज की स्थापना करने मे चिंतनशील थे स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त इस बात पर बल दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखो श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। उन्होंने कहा है कि उठो, जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाऐ।

**विकासोन्मुख शिक्षा –** स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को व्यापक अर्थों में लिया। उनकी दृष्टि में कुछ परिक्षाएं पास कर लेना तथा अच्छे भाषण दे देना ही शिक्षा नहीं है। इसमें जीवन संघर्ष करने के लिए तैयारी चरित्र निर्माण समाज सेवा की भावना जैसा साहस उत्पन्न करना निहित है। उन्होने कहा है ''आज कि यह उच्च शिक्षा रहे या बन्द हो जाये इससे क्या बनता बिगड़ता है। यह अधिक अच्छा होगा, यदि लोगों को थोड़ी तकनीकी शिक्षा मिल सके। जिससे व नौकरी की खोज में इधर उधर भटकने के बदले किसी काम में लग सके और जीविकोपार्जन कर सकें। स्वामी विवेकानन्द केवल आध्यात्मिक शिक्षक ही नहीं थे अपितु भारतीय समाज एवं राष्ट्र की अनेक समस्याओं को हल करने का मार्ग भी उन्होंने प्रस्तुत किया था। उनका विचार था कि भारत की पिछड़ी हुई स्थिति के लिए शिक्षा की कमी बहुत हद तक उत्तरदायी है। वे तत्कालीन शिक्षा–पद्धति के प्रबल आलोचक थे। अंग्रेजी की शिक्षा पद्धति को वे बाबुओं का निर्माण करने वाला यन्त्र मानते थे। यह शिक्षा उन्हें नकारात्मक ज्ञान देती थी और स्वावलम्बन विहिन थी।

यह शिक्षा न तो उन्हें जीविकोपार्जन के लिए तकनीकी ज्ञान देती थी और न जीवन जीने का मार्ग दिखाती थी। स्वामी विवेकानन्द शिक्षा–पद्धति को निश्चित लक्ष्यों से संयुक्त करना चाहते थे। उनका ध्येय मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा'–पद्धति को अंगीकार करना था। वे आत्मविश्वास के माध्यम से चरित्र निर्माण

द्वारा मनुष्य निर्माण के पक्षधर थे। शिक्षाविदों को चाहिए कि वे आधुनिक विज्ञान की सहायता से विद्यार्थियों के ज्ञान को जगाये। उन्हे इतिहास भूगोल विज्ञान गणित और साहित्य की शिक्षा दे और इनके साथ–साथ धर्म एवं आध्यात्मिकता के महान सत्य को भी बताए और यह शिक्षा वर्तमान के लिए ही नहीं अपितु भविष्य के लिए भी प्रासंगिक हो। उन्होंने शिक्षा को धर्म आदर्श, चरित्र सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की नींव पर आधारित करने पर बल दिया है।

स्वामी विवेकानन्द ने देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह न तो विशाल जनसंख्या तक पंहुच पाई है, न ही मूल्यपरक बन पाई है तथा न ही भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को समाहित कर पाई है। वर्तमान में विद्यालय सापेक्ष शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। जो शिक्षा दी जा रही है उसे मानव निर्माण की शिक्षा नहीं कहा जा सकता। निश्चित रूप से नकारात्मक शिक्षा दी जा रहा है। उनका मानना था कि केवल पुस्तकीय ज्ञान शिक्षा नहीं है।

स्वामी जी ने कहा है आज की यह उच्च शिक्षा रहे या बन्द हो जाये इससे क्या बनता बिगड़ता है। यह अधिक अच्छा होगा यदि लोगों को थोड़ी तकनीकी शिक्षा मिल सके जिससे वे नौकरी की खोज में इधर–उधर भटकने के बजाय किसी काम मे लग सकें और जीविकोपार्जन कर सकें। उन्होंने कहा कि शिक्षा द्वारा मनुष्य का निर्माण किया जाता है। समस्त अध्ययनों का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है जिस अध्ययन द्वारा मनुष्य भी सकंल्प शक्ति का प्रवाह संयमित होकर प्रभावोत्पादक बन सके उसी का नाम शिक्षा है।

**मनोसामाजिक पुर्नवास** – स्वामी विवेकानन्द जी ने मानवता की सेवा के परिप्रेक्ष्य में मानवता का आंलिगन किया है। बालक के लिए एकाग्रता के माध्यम से क्रिया प्रधान और व्यावसायिक शिक्षा को आवश्यक बताया जिससे कि वह आधुनिक परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य में उचित सामंजस्य करता हुआ आत्मनिर्भर बन सके। स्वामी जी ने मानवता की सेवा के परिप्रेक्ष्य में मानवतावाद का आलिंगंन किया। स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिकता के प्रबल समर्थक थे। वे कहते थे ध्यान रखो, यदि तुम आध्यात्मिकता को त्याग कर तथा इसे एक ओर रखकर पश्चिम की जड़तापूर्ण सभ्यता के पीछे दौड़ोगे तो परिणाम यह होगा कि तीन पीढ़ियों मे तुम मृत शक्ति बन जाओगे क्योंकि इससे राष्ट्र की रीढ़ टूट जायेगी। तुमको बतलाया गया है कि तुम हीन हो तथा शक्तिविहीन हो। यह सुनकर वर्षों से अपने को हीन और निकम्मा समझने लगे हो। उन्होंने कहा कि हमें केवल सकारात्मक विचारों पर बल देना चाहिए। नकारात्मक विचार मनुष्य को कमजोर बनाते हैं। अतः उन्होंने बालक के अनुरूप एकाग्रता के माध्यम से क्रिया प्रधान और उपयोगी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को आवश्यक बताया जिससे कि वह आधुनिक परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य में उचित सामंजस्य करता हुआ आत्म निर्भर बन सके।

**स्त्री–पुरूष समानता** :– स्वामी जी के अनुसार ''स्त्री जाति की उन्नति के बिना भारत कभी भी विकास नहीं कर सकता। उन्होंने कहा– ''पुत्रेण दुहिता समा'' अर्थात पुत्र और पुत्री का समान पालन–पोषण करें। स्त्रियों में अभूतपूर्व शक्ति होती है। उनकी शक्ति को पहचानने तथा योग्यतानुरूप सही दिशा देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अंधविश्वासों, रूढ़ियों, जड़ताओं, बालु जैसे धरातल पर टिके सामाजिक व्यवहारों पर चिन्तन मनन कर स्त्रियों को इससे दूर रहने कि आवश्यकता बनाई। स्त्रियां किसी भी तरह से पुरूषों से किसी योग्यता में पीछे नहीं है। इस भाव का समस्त स्त्रियों मे संचार करना परम आवश्यक हैं। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार स्त्री और पुरूष समाज रूपी पक्षी के दो सृदढ़ पंख है। उनका मानना था कि कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता। उनकी इस धारणा से किसी भी समाज–राष्ट्र के गौरव और उत्कर्ष में नारी का योगदान स्वतः स्पष्ट हो जाता है। पक्षी के लिए दोनों पंख समान महत्वशील है। इसी प्रकार स्त्री पुरूष दोनों के समान योगदान से ही किसी भी घर–परिवार समाज या देश का उत्थान होता है। नारी शिक्षा के क्षेत्र में भी विवेकानन्द कोई भेदभाव नहीं मानते थे। स्वामी जी के विचार में भारत के पतन और अवनति का एक मुख्य कारण स्त्रियों का अशिक्षित होना है। बाल–विवाह तथा विधवाओं के प्रति समाज को परिवर्तित दृष्टि रखनी चाहिए। विवेकानन्द जी नारियों को ऐसी शिक्षा देने के पक्ष में थे जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भलीभातिं निभा सकें। उन्होने कहा है कि ''भारत की नारियां पवित्र और त्यागमूर्ति है क्योंकि उनके पास सहज शक्ति और बल है। नारी की विशिष्टता के बारे में उन्होंने कहा है कि काव्य और प्रेम दोनों नारी हदय की सम्पति हैं।

## प्रजातंत्रिक सहभागिता का विकास

स्वामी विवेकानन्द ने अनेकता में एकता का भाव ग्रहण करते हुए समस्त भारतवासियों को अपनेपन के सूत्र में बांधने की आवश्यकता बताई। उनके विचार में प्रत्येक भारतवासी उनका भाई है। भारत के दवी–देवता उनके प्राण हैं। उन्होंने दीन–दुखियों, पीड़ितों, आर्थिक दृष्टि से कमजोर अशिक्षितों के साथ हो रहे विभेद को अनावश्यक एवं अन्यायपूर्ण माना है।

## सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में विकास

स्वामी जी ने व्यक्ति के वैयक्तिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में विकास पर बल दिया है। स्वामी जी कहते हैं कि हम दुर्बल है इसलिए त्रुटि करते हैं और हमारी दुर्बलता का कारण हमारा अज्ञान है। आत्मिक विकास ही वैयक्तिक विकास है परन्तु यह तब तक सम्भव नही हैं जब तक मनुष्य का सामाजिक विकास नहीं हो जाता। स्वामी जी विद्यार्थियों में कृषि, उद्योग, तकनीकी ज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से इतनी सामर्थ्य उत्पन्न करना चाहते थे कि वे शिक्षा द्वारा आत्म निर्भर तो बने ही साथ ही शोषण से बचते हुए समाज और राष्ट्र का भी कल्याण करें।

## शैक्षिक पाठ्यक्रमों के द्वारा शान्ति स्थापना

शान्ति शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में पढाए जाने की आवश्यकता नहीं है। बालक को शान्ति शिक्षा विद्यालयी विषयों के साथ भी सिखाया जा सकता है। विद्यालय कुछ ताजा समस्याओं को चुन सकता है। सामाजिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों को उठा सकता है। बालकों में जागरूकता ला सकता है। शान्ति शिक्षा किसी औपचारिक शिक्षा का विषय नहीं है। इसके लिए न ही कोई परीक्षण होता है। और न ही कोई सर्टिफिकेट होता है। इसकी आधारशिला समझदारी और पुनर्बलन है इसकी आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति विशेष, समाज, राष्ट्र तथा विश्व को है।

## प्रकृति के प्रति जागरूकता

हमारें चारों ओर जो भी भौतिक, जैविक व सांस्कृतिक वातावरण है, वही हमारा पर्यावरण है। जीवन के प्रारम्भ से लेकर अंत तक पर्यावरण के साथ हमारा सम्पर्क सामंजस्य व संघर्ष रहता है। हर व्यक्ति के विकास के लिए पर्यावरण एक महत्वपूर्ण घटक है। अतः पर्यावरण को व्यक्तिगत और सामाजिक अस्तित्व की दृष्टि से देखना होता है। शिक्षा ही मानव को सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को पीढ़ी हस्तान्तरित करती आयी है। प्राकृतिक वातावरण व पृथ्वी के साथ सामंजस्य से ही शान्ति की प्राप्ति की जा सकती है।

## निष्कर्ष

शांति शिक्षा एक सकारात्मक दृष्टिकोण है जिसका अर्थ ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो अंहिसा, सामाजिक न्याय, भातृत्व व समानता आदि सकारात्मक गुणों को अपने जीवन का अगं बनाएं और हिंसा, शोषण, सामाजिक अन्याय, द्वैष, परस्पर वैमनस्य ओर असहयोग आदि नकारात्मक प्रवृतियों से दूर रहे। इस रूप में शांति–शिक्षा एक प्रक्रिया है जो प्रांरभ से ही बालकों में शैक्षिक पर्यावरण के माध्यम से सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है।

प्रस्तावित शोध समस्या स्वामी विवेकानन्द के दर्षन में शांति शिक्षा के तत्व एवं वर्तमान शिक्षा जगत में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा देने में राम बाण औषधि साबित हो सकती है, इनका जीवन और चिन्तन शैली राष्ट्रीयता से ओतप्रोत थी, जिनकी आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता नितान्त आवश्यक जान पड़ती हैं, इनके माध्यम से राष्ट्रीय जीवन को कुछ नई दिशा मिल सकती हैं।

## सन्दर्भ सूची


1. नागरथ, राधिका (2015) : शान्ति की तलाश में जिंदगी. नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन दिल्ली. पृष्ठ सं0 11
2. कुमार, रविन्द्र तथा किरनलता डंगवाल (2016–17) : मूल्य एवं शान्ति शिक्षा, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन. पृष्ठ सं0 85
3. गार्डिया, आलोक एवं पुष्पेश पाठक, (2010), शान्ति शिक्षा एवं विद्यालयों में शान्ति संस्कृति की अवधारणा, भारतीय आधुनिक शिक्षा अप्रैल, पृष्ठ सं0 46
4. मालवीय, राजीव (2010) : शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठिभूमि. इलाहाबादः शारदापुस्तक भवन. पृष्ठ सं0 104
5. पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर पृष्ठ सं0 123
6. पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर. पृष्ठ सं0 137
7. पाठक, पी.डी. (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा–2 : विनोद पुस्तक मन्दिर. पृष्ठ सं0 142
8. एन.सी.ई.आर.टी. आधर पत्र 'शान्ति के लिए शिक्षा' पृष्ठ सं0 10
9. रॉलेण्ड रोमेन, ''द लाइफ ऑफ विवेकानन्द एण्ड द यूनिवर्सल गास्पेल'', 24 वां संस्करण, अद्वैत आश्रम – 2008
10. चतुर्वेदी, बद्रीनाथ, ''स्वामी विवेकानन्द द लिविंग वेदान्ता,'' पेग्विन ,2006
11. ठेंगड़ी, दत्तोपंत, ''पश्चिमीकरण के बिना आधुनिकीकरण'' सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवालान, नई दिल्ली–2003
12. स्वामी ज्योतिर्मयानन्द, '' विवेकानन्द हिज, गोस्पेल ऑफ मैन मेकिंग''–2000
13. राव, वी. के. आर. वी., "आधुनिक भारत के निर्माताः स्वामी विवेकानन्द," सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, मार्च –1999
14. रानाडे, एकनाथ, "पत्थर में प्रगटे प्राण," विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाषन विभाग, जोधपुर, मार्च 2001
15. रानाडे, एकनाथ, "उतिष्ठत ! जाग्रत !!," विवेकानन्द केन्द्र हिन्दी प्रकाषन विभाग, जोधपुर, अप्रैल 2001
16. स्वामी गम्भीरानन्द, "युगनायक विवेकानन्द," (प्रथम खण्ड) रामकृष्ण मठ, नागपुर– 2001
17. स्वामी गम्भीरानन्द, "युगनायक विवेकानन्द,"(द्वितीय खण्ड) रामकृष्ण मठ, नागपुर– 2002
18. स्वामी गम्भीरानन्द, "युगनायक विवेकानन्द,"(तृतीय खण्ड) रामकृष्ण मठ, नागपुर– 2002
19. सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, स्वामी व्योमरूपानन्द, "विवेकानन्द चरित," रामकृष्ण मठ, नागपुर–2004